सभ्यता का संक्रमण काल एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Sadhana Maurya

(Assis.Professor) NET/ SOCIOLOGY

Ramnath Mahavidhalaya jaunpur

Affilates by V.B.S.P.U. Jaunpur

सारांश–संस्कृति सावयव की तरह है और विश्व इतिहास उसकी सामूहिक जीवनी वास्तव में देखा जाय तो इस महामारी ने आधुनिक सभ्यता का एक ऐसी दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां पर आदमी अदृश्य कोरोना की मारक त्रासदीं से जूझ रहा है। आधुनिक सभ्यता को बनाने वाले उन तारों को छूने से डर रहा है। जबकि उन्हीं तारों से उसका जीवन बंधा हुआ है। इस भय और दहशत के कारण अपने घरों में दुबका हुआ आधुनिक मनुष्य अन्दर ही अन्दर आधुनिक से आधुनिक जीवन शैली के अतिचार का भी अनुभव किया है।

मुख्य शब्द–सभ्यता,संस्कृति,परिस्थिति,चुनौती,निरंतरता,प्रत्युत्तर,कोविड–19

संसार नश्वर है जो जन्म लेता है अंत अवश्य होता है चाहे वह सजीव है या निर्जीव, अवधि बदलती है परंतु अंत तय है यह उक्ति सार्वभौमिक है और आमजन्य है, शिशु से लेकर वृद्धावस्था तक अनेक दुखों और सुखों के साथ जीवन चलता है। सतयुग से लेकर कलयुग तक का कालखंड चलता है। समाजशास्त्री इन अवस्थाओं को सभ्यता के उत्थान और पतन के रूप में देखते हैं। कई सभ्यताओं ने जन्म लिया, नगरीय हो या ग्रामीण, वृहत हो या सूक्ष्म इतिहास में दर्ज की गई अब उनके अवशेष मात्र हैं। आज मानव की सभ्यता अपने संक्रमण काल से गुजर रही है चुनौती दे रही अपने आप को बचाए रखने का, वो भी एक वायरस के रूप में।

सभ्यता का आशय उस समूची यंत्र–पद्धति और उसके संगठन से है जिसकी मानव ने अपने जीवन की परिस्थितियों पर नियन्त्रण प्राप्त करने के प्रयास में रचना की

है। सभ्यता, सांस्कृतिक विकास के स्तर को प्रकट करती है यह किसी मानवीय समाज की विशिष्ट मानवीय उपलब्धि तथा गुणों का संकेत देती है। सभ्यता और संस्कृति का अन्तर बताते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिन्तक श्री अंज्ञेय ने लिखा है कि ''सभ्यता वह है जिसमें हम जीते है और संस्कृति वह है जो हममें जीती है।'' जो कुछ हम है वही संस्कृति है तथा जो कुछ हमारा है, वही सभ्यता है।[1]

ऑनार्ल्ड टॉयनबी का ''चुनौती और प्रत्युत्तर'' का सिद्धान्त परिवर्तन के चक्रीय सिद्धान्त का समर्थन किया है। उन्होंने दुनिया की 21 प्रमुख सभ्यताओं का गहन अध्ययन किया, जिनका वर्णन उनकी पुस्तक A Study of History (1934-63) में मिलता है। उन्होंने स्पेंग्लर की तरह यह विचार व्यक्त किया है कि हर सभ्यता की एक चक्रीय रीति से जन्म एवं मृत्यु होती है। पर उन्होंने स्पेंग्लर की तरह यह स्पष्ट करने की आवश्यकता महसूस नही की है कि किस सभ्यता का जीवन चक्र कितना लम्बा होता है। उनका चक्रीय सिद्धान्त चुनौती एवं प्रतिक्रिया का सिद्धान्त पर आधारित है किसी भी सभ्यता को चुनौती दो क्षेत्रों से मिलती है एक भौगोलिक परिस्थिति एवं दूसरी सामाजिक परिस्थिति।[2]

प्रत्येक सभ्यता के प्रारम्भ में लोगों को समाज में भौगोलिक प्राकृतिक आपदाओं को झेलना पड़ा इन चुनौतियों को झेलना कोई आसान काम नही था। समाज और प्रकृति के बीच एक चुनौतीपूर्ण स्थिति होती है, उसका सामना करने के लिए मनुष्य को विभिन्न प्रकार की क्षमताओं की आवश्यकता होती है। इस अस्तित्व की लड़ाई में उसकी शक्ति क्षीण होती है। दूसरी चुनौती का स्वरूप भौगोलिक न होकर सामाजिक होता है। इस चुनौती का स्रोत आन्तरिक और बाह्य दोनों होता है। टॉयनवी का आंतरिक स्रोत से तात्पर्य स्वदेशी सर्वहारा वर्ग से है, जो ज्यादा लम्बे समय तक अपने ही समाज की सृजनशील अल्पसंख्यकों के इशारे पर काम नही करना चाहता है। फलस्वरूप दोनों के बीच संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। बाह्य स्रोत के अंतर्गत उन्होंने बाहरी आक्रमणकारी बर्बर जाति के लोगों को रखा है, जिसे बाह्य सर्वहास वर्ग भी कहा गया है। दूसरी शब्दों में, जब सभ्यता का विकास होता है, तो उसे सभ्यता को सृजनशील अल्पसंख्यकों एवं स्वदेशी सर्वहारा वर्ग के संघर्ष मात्र से ही खतरा नही होता है, बल्कि पड़ोसी बर्बर जाति के लोगों से भी खतरा रहता है। जब इस प्रकार के कलह और तत्व की स्थिति किसी सभ्यता के सामने उत्पन्न हो जाती है, तो वह पतन और बिखराव की ओर बढ़ने लगती है।

प्रत्येक सभ्यता का भविष्य सृजनशीलता अल्पसंख्यको पर निर्भर करता है। सभ्यता के आरम्भिक काल में वे कल्पनाशील, शक्तिशाली एवं चुनौतियों का बहादुरी के साथ मुकाबला करने वाले होते है। नेतृत्व की रचनात्मक क्षमता के कारण सम्बन्धित समाज विकास के चरमोत्कर्ष बिन्दु पर पहुँच जाता है। लेकिन जब वे चुनौतियों का ठीक से सामना नहीं कर पाते है, तो सभ्यता का पतन निश्चित हो अल्पसंख्यकों का चुनौतियों से हार है।[3]

ओसवाल्ड स्पेंग्लर की संस्कृति का चक्रीय सिद्धान्त जर्मन दार्शनिक ओसवाल्ड स्पेंग्लर ने अपनी पुस्तक The Decline of te west (1926) में यह बताया है कि किसी भी संस्कृति का चक्रीय रीति से होता है। संस्कृति की तुलना सावयव से करते हुए उन्होंने कहा है कि ''संस्कृति सावयव की तरह है और विश्व इतिहास उसकी सामूहिक जीवनी''[4]

स्पेंग्लर का मानना है कि जैसे व्यक्तियों के जीवन में उत्थान एवं पतन होता है, वैसे ही संस्कृति का भी उत्थान एवं पतन होता है। जैसे व्यक्ति का जीवन–चक्र बचपन, युवा, परिपक्वता एवं बुढ़ापा के चरणों से क्रमशः गुजरता है, संस्कृति भी ठीक उसी ढंग से चार चरणों से गुजरकर समाप्त हो जाती है। संस्कृति के चक्रीय विकास के इस नियम को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने इसकी तुलना चार ऋतुओं से की है– बसन्त, पतझड़, सर्दी एवं ग्रीष्म[5]

पिट्रिम ए0 सोरोकिन का चक्रीय सिद्धान्त सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धान्त के क्षेत्र में रूसी–अमेरीकी समाजशास्त्री सोरोकिन की देन महत्वपूर्ण है, जिसकी चर्चा उनकी पुस्तक Social and Cultural Dynamics (1937-41) में देखने को मिलती है। सोरोकिन ने अनुभवाश्रित आँकड़ों के सहारे चक्रीय सिद्धान्त को स्थापित करने की कोशिश की है। उन्होंने परिवर्तनों के विश्लेषण के निमित्त मानव इतिहास के बीते तीन हजार वर्षों का अध्ययन किया। सोरोकिन ने समाज की संस्कृति को मुख्यतः तीन भागों में बाटा है, वे है आदर्शात्मक संस्कृति, इन्द्रियपरक संस्कृति एवं आदर्शवादी संस्कृति।[6]

एक सांस्कृतिक व्यवस्था से दूसरी सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन निश्चित लेकिन अनियमित ढंग से होता है। यह भी आवश्यक नहीं है कि सांस्कृतिक व्यवस्था में

परिवर्तन हमेशा एक ही दिशा में हो। अब यह प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि संस्कृति या आदर्शात्मक से इन्द्रियपरक संस्कृति में परिवर्तन के क्या कारण है? सोरोकिन ने इस प्रश्न का उत्तर अपने अन्तर्भूत परिवर्तन के सिद्धान्त के माध्यम से दिया है। उन्होंने परिवर्तन का कारण प्रकृति में क्रियाशील आन्तरिक शक्ति को माना है। दूसरे शब्दों में सामाजिक परिवर्तन एक प्रक्रिया है, जो संस्कृति के अन्दर ही क्रियाशील शक्तियों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती है। सोरोकिन का सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिशीलता का सिद्धानत तथ्यों को अति सरल कर देता है। ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण जितना सरल दिखाई पड़ता है, वस्तुतः उतना सरल नहीं है।[7]

मानवशास्त्री और समाजशास्त्री सिद्धान्तकारों ने मानव सभ्यता और संस्कृति के उत्थान एवं पतन का विश्लेषण ऐतिहासिक शोध एवं अनुभव के आधार पर विश्लेषित किया है कालखण्डों में समाज में होने वाले परिवर्तन और प्राकृतिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ आती रहती है। इन चुनौतियों का सामना मानव सभ्यता और संस्कृति से होती है और समुचित प्रति उत्तर भी मानव सभ्यता ने लिया है। परन्तु जब–जब ये प्राकृतिक घटनाए मानव सभ्यता के सामने खड़ी होती है विकास पर हलचल अवश्य पैदा कर देती है औरअपने अवशेष छोड़ जाती है, प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि इस **चुनौतियों का सामना कभी–कभी संस्कृति मजबूत नही कर पाती है और इतिहास का हिस्सा** बन जाती है। आज जब दुनिया एक वायरस से लड़ रही है इस आपदा में लाखों लोगों ने अपनी जान गवां दी, बच्चें अनाथ हो गये, परिवार का सबल ही समाप्त हो गया। आज मानव सभ्यता के सामने एक वायरस चुनौती दे रहा है। विश्व पटल पर यह चुनौती सामाजिक एवं आर्थिक अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है। दुनिया का सर्वाधिक दूसरा सबसे बड़ा आबादी वाला भारत, संसाधनों एवं प्रशिक्षण अपर्याप्त होने के कारण संघर्ष कर रहा है।

कोविड–19 का चुनौति–देश में बढ़ते कोरोना के मामलों को देखते हुए सरकार ने भविष्य में किसी भी चुनौति का सामना करने के लिए कई कदम उठाए है। इनमें शहरों के हिसाब से ICU बेड्स और वेंटिलेटर्स को चिन्हित करना और हेल्थ केयर प्रोफेशनल्स के लिए सुरक्षा साधन सुनिश्चित करना शामिल है। देश में लॉकडाउन होने के बाद से कोविड–19 के पॉजिटिव मामलों की संख्या अच्छी खासी बढ़ रही है। सरकार ने भविष्य में किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए कयी कदम उठाए है, इनमें शहरों के

हिसाब से ऑक्सीजन, वैक्सीन ICU बेड्स और वंटिलेटर्स आदि को व्यवस्था करना सरकार के लिए एक चुनौती है। एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स ऑफ इण्डिया (AHPI) देश में नर्सिंग होम्स और हॉस्पिटल्स का प्रतिनिधितव करने वाला संगठन है। इसकी ओर से स्वास्थ्य मंत्रायल को सौपी रिपोर्ट में महामारी से लड़ने के लिए स्टैंडर्ड आंपरेटिंग प्रोसिजर (SOP) सुझाव है। रिपोर्ट में लक्षण वाले मरीजों के लिए समर्पित कोविड–19 केयर सेंटर्स बनाने का सुझाव दिया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 60 साल तक मरीजों को कोविड–19 अस्पताल में भर्ती किया जाना चाहिए और 65 साल के ऊपर वाले मरीजों के लिए ICU सुविधा होनी चाहिए एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स ऑफ इण्डिया (AHPI) ने महामारी की रफ्तार पर नजर रखने के लिए आबादी की हर जिले के हिसाब से मैंपिग करने का भी सुझाव दिया है।[6] अप्रैल 2021 के आखिरी हफ्ते में इजरायल, ने एक दिन में कोरोना से शून्य मौत का लक्ष्य भी हासिल किया। यह दिखता है कि टीके कारगर है, लेकिन तभी जब आबादी के एक बड़े हिस्सें को लग जाएं। भारत को भी टीकाकरण के लिए एक बेहतर खाका तैयार करना होगा। इसमें उसे अपनी सेना और सेवानिवृत्त डॉक्टरों को शामिल करना होगा। हमें ऐसी दवाओं के निर्माण पर भी नजर रखनी चाहिए, जो संक्रमण को तेजी से फैलने से रोक सकती है। भारत को अपनी कई कंपनियाँ नई वैक्सीन और दवाइयों पर काम कर रही है। उन्हें सरकार से मदद की जरूरत है।[8]

कई अमीर देशों के विपरीत भारत ने शुरूआत में वैक्सीन शोध में निवेश न कर चूक कर दी। हमें कोविड को सरीखी महामारी से किसी दूसरी बीमारी की तरह नहीं निपटा सकते। इससे निपटना युद्ध लड़ने जैसा होता है, जिसके लिए जबरदस्त तेजी और समन्वय की जरूरत होती है। भारत को संक्रमण रोगो से निपटने के लिए मिशन मोड़ वाला एक अलग विभाग बनाना होगा। यह महज स्वास्थ्य मंत्रालय तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि इसमें रक्षा, वाणिज्य और गृह मंत्रालय को भी शामिल करना होगा। इसके पास सेना को तेजी से इकट्ठा करने, आपातकालीन धन देने, आँकड़ों तक पहुँच जिला अधिकारियों पर नियन्त्रण, पुलिस व्यवस्था, खरीद और सामान की आपूर्ति की शक्ति होनी चाहिए।[9]

आधुनिक युग में कोविड–19 से समूची दुनिया इस महामारी की चपेट में है। महामारियाँ तो पहले भी आती रहीं हैं और मनुष्य अपना बचाव करने में सफल भी रहा है। आशा है इस बार भी कोरोना हारेगा और मनुष्य की जीत होगी। परन्तु हारा हुआ कोरोना जाते–जाते इतना जो जरूर कहता जायेगा कि आधुनिक सभ्यता का वायरस हूँ मेरे फलने–फूलने की बेशुमार सुचालकता उसकी रंगो में है। आज यह मानव–जाति की विवेक पर निर्भर करता है कि वह आधुनिक सभ्यता को व्यामोह से निजात पाने का विकल्प ढूँढेगा या फिर उसी के एक आभासी आयाम (वर्चुअल डायमेंसन) को विकसित कर लेगा जो मेरी संक्रमक शक्ति की पकड़ से बाहर हो।

कोरोना वायरस की यह चेतावनी काल्पनिक ही सही लेकिन जायज है क्योंकि इससे फैली यह महामारी वैसी नहीं जैसी कि पहले की महामारियां होती थी। यह कई मायनों में बिल्कुल अलग प्रकार की है। इससे पहले की महामारियों को निरअपवाद रूप से प्राकृतिक अशुभ हो। सम्भव है कि यह किसी दुष्ट मानवीय चेष्टा की सोची–समझी कारगुजारी हो। पहले की महामारियाँ तीव्र गति से मनुष्य को मृत्यु के काल गाल में झोंक देती थी और उनके फैलने की गति धीमी होती थी। परन्तु कोरोना वायरस मनुष्य को धीरे–धीरे मारता है और इसके फैलने की रफ्तार बहुत तेज है। जबकि यह वायुमण्डल पर सवार होकर बहुत दूर की यात्रा करने में सक्षम नही है। पहले की महामारियाँ अक्सर गंदी बस्तियों से फैलती थी क्योंकि गाँव देहात का जीवन हाइजेनिक नही हुआ करती है, परन्तु कोविड–19 महानगरों से फैली महामारी है।

मनुष्य के मन–मस्तिष्क पर इसकी प्रभावमत्ता इतनी अधिक है कि विश्व इतिहास में सम्भवतः यह पहली घटना हो जिसका संज्ञान पूरी दुनिया भर में एक साथ लिया गया है। किसी घटना का वैश्वीय स्तर पर संज्ञान में लिया जाना एक प्रकार की वैश्वीय एकजुटता को प्रदर्शित करने वाली पहल होती है। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि वैश्वीय एकजुटता की इस संज्ञानात्मकता के अंदर ही अन्दर प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्य से अलग–थलग रहने के लिए विवश कर दिया गया है। हर एक आदमी अपनों और परायों से डरा हुआ है कि मैं अनजाने में संक्रमित न हो जाऊँ। सामाजिक दूरी बरतने के नाम पर यह मनुष्य का मनुष्य से बहुत बड़ा अलगाव–बिलगाव है। पता नहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिमाग में समाज की कैसी अवधारणा है जिसके चलते सामाजिक दूरी शब्द

का इस्तेमाल कर दिया गया और बहुत अधिक प्रचलन में आ गया। जबकि होना चाहिए था सम्पर्क दूरी।

वास्तव में देखा जाय तो इस महामारी ने आधुनिक सभ्यता का एक ऐसी दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां पर आदमी अदृश्य कोरोना की मारक त्रासदीं से जूझ रहा है। आधुनिक सभ्यता को बनाने वाले उन तारों को छूने से डर रहा है। जबकि उन्हीं तारों से उसका जीवन बंधा हुआ है। इस भय और दहशत के कारण अपने घरों में दुबका हुआ आधुनिक मनुष्य अन्दर ही अन्दर आधुनिक से आधुनिक जीवन शैली के अतिचार का भी अनुभव किया है। पता नहीं हम अपने जीवन के कितने प्रकारों के अभावों का सामना करते है, परन्तु कोरोना वायरस ने हमारा सामना आधुनिक जीवन शैली के अभाव से कराया है।[10]

चिकित्सा एवं तकनीक से प्रतिउत्तर–मौजूदा पारम्परिक नियामक और प्रमाणित करने वाली संस्थाओं से इतर उचित अकादमिक, अनुसंधान और नई खोज के केन्द्र ही आज स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में नये–नये आविष्कार कर रहे है। अब उन्हें नयी खोज के नियमितीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा बनाए जाने की जरूरत है। नया कोरोना वायरस पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था की बत्तियाँ बुझा रहा है। स्वास्थ्य का ये वैश्विक संकट अब पूरी दुनिया के लिए आर्थिक कयामत का रूप ले चुका है, कोविड–19 महामारी के कारण दुनिया भर और दूरगामी आर्थिक दुष्प्रभाव पड़ना तय है। इस दुनिया की अधिकतर अर्थव्यवस्थाएं अभी महामारी कीइस सुनामीके सदमें में हैं। माना जा रहा है कि इस महामारी से पैदा हुआ आर्थिक संकट 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट या फिर 20वीं सदीं की शुरूआत में आई महान आर्थिक मंदी से भी बुरा साबित हो सकता है। तमाम क्षेत्रों में से स्वास्थ्य का सेक्टर ऐसा है जहां पर इस महामारी के बुरे प्रभाव का अंदाजा पहले से ही लगाया जा सकता है। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश जिन्होंने किसी महामारी की आशंका में पहले अपनी तैयारियों का अभ्यास या ड्रिल किया था, उन्हें भी तो कोविड–19 से इतनी भारी तबाही का अंदाजा नही था या फिर, उन्होंने स्वास्थ्य के किसी संकट से निपटने के लिए किए गये अभ्यासों से कोई सबक नहीं लिया था। इसलिए जब एक बार महामारी का प्रकोप फैलने लगा, तो इन देशों में जिन चीजों की शुरूआत में ही कमी होने लगी थी, वो थी आई0सी0यू0 के बिस्तर, वेंटिलेटर और मरीजों की देखभाल, ऑक्सीजन

गैस, वैक्सीन आदि के लिए निजी सुरक्षा के उपकरण सरकार द्वारा प्रायोजित स्वास्थ्य व्यवस्था वाले देशों में ही इस वायरस से निपटने के प्रयास कारगर होते दिखे। सिंगापुर, ताइवान, न्यूजीलैंड और जापान जैसे कुछ गिने–चुने देश ही थे, जो इस महामारी से मची तबाही से खुद को बचाने में सफल हो सके। इन देशों के पास इस बात की सुविधा थी इनके सभी नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध थी, ऐसे में जब वायरस का संक्रमण फैलने लगा, तो इन देशों के नागरिकों पास यो तो मुफ्त में या फिर सरकार की मदद से बेहद कम से कम पैसों में इसका टेस्ट कराने की सुविधा हासिल थी। आर्थिक संकट के दौरान, स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठानें का खर्च बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है।[11]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर और वर्तमान में कोविड–19 के तथ्यात्मक आँकड़ों पर शोध से प्राप्त होता है कि आज मानव सभ्यता के सामने इस महामारी से बचने और निरन्तरता को बनाये रखने की चुनौती है। आज सामाजिक मूल्य, नैतिकता एवं सामाजिक गतिशीलता में व्यापक परिवर्तन आ गया है। साथ–साथ रहकर भी अलग–अलग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

[1] उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश रावत हरिकृष्ण पृ0–54

[2] A Study of History

[3] समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त, सिंह जे०पी० पृ0–373

[4] The Decline of te west (1926)

[5] समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त, सिंह जे०पी० पृ0–371

[6] Social and Cultural Dynamics (1937-41)

[7] समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त, सिंह जे०पी० पृ0–371

[8] https://www.aajtak.in

[9] दैनिक जागरण 2 मई 2021

[10] https://www.dhsgsu.ac.in

[11] https://www.orforlins.org